ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।
अथर्व. 7/18/2
जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।
Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 43, अंक 12 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 जनवरी, 2020 से रविवार 19 जनवरी, 2020
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

वैदिक ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार की विशेष उपलब्धियों के साथ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला सम्पन्न

वैदिक साहित्य की चली लहर, सत्यार्थ प्रकाश पहुंचा घर-घर, शहर-शहर

आर्य समाज द्वारा संचालित शंका समाधान कार्यक्रम : 10 रुपए में सत्यार्थ प्रकाश रहे विशेष आकर्षण का केन्द्र

4 जनवरी से 12 जनवरी 2020 तक दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित विश्व पुस्तक मेला वैदिक ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार की अनंत उपलब्धियों के साथ प्रेम-सौहार्द के वातावरण में संपन्न हुआ। विश्व पुस्तक मेले में लगातार 8 दिनों तक आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। हजारों लोगों ने सत्यार्थ प्रकाश को 10 रुपए में खरीदकर गौरव महसूस किया। इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा विशेष रूप से शंका समाधान के कार्यक्रम में विभिन्न मतावलंबियों ने अपनी जिज्ञासा व्यक्त की और समाधान पाकर संतुष्ट हुए। महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेंटर द्वारा पूरे पुस्तक मेले को कवर किया। आर्य समाज द्वारा हॉल नं. 12 में स्टॉल नं. 151 से 160 तथा हॉल नं. 7 में 62-63 नं. पर वैदिक साहित्य के विशेष स्टॉल लगाए गए थे। लगातार 8 दिन सुबह से लेकर शाम तक इन तमाम स्टालों पर भारी संख्या में वैदिक साहित्य के खरीददार उपस्थित रहे।

आर्य समाज द्वारा संचालित इन सारे स्टॉलों के संयोजक, सह सयोंजक श्री सुखवीर आर्य जी सहित श्री सतीश चड्डा जी, श्री एस.पी.सिंह जी, श्री शिव कुमार मदान जी, श्री सुरेश चंद गुप्ता जी, श्रीमती मधु आर्या जी, श्री ओमदत्त पंचाल जी, श्री अजय कुमार लखनऊ, श्री रवि कुमार जी, श्री अग्निवेश जी इत्यादि महानुभाव और जो गत आर्य संदेश के अंक में हम नाम दे चुके हैं, सभी आर्य महानुभाव बधाई के पात्र हैं। वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए सभी महानुभावों ने दिन-रात अथक, परिश्रम और पुरुषार्थ किया। इसके लिए सभी को बहुत-बहुत बधाई-आभार। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने स्वयं अपने कर-कमलों से 4 जनवरी को पुस्तक मेले का उद्घाटन कर सभी कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया।

विश्व पुस्तक मेले में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, दर्शनशास्त्र और वैदिक विद्वानों, आर्य संन्यासियों की पुस्तकें भारी संख्या में खरीदी गई। वैदिक विद्वानों में आचार्य भद्रकाम वर्णी जी, स्वामी संपूर्णानंद जी, डॉ. सर्वेश जी, आचार्य चंद्रशेखर जी ने शंका समाधान का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया। इस अवसर पर अनेक आर्यजन, आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य लगातार स्टॉल पर आते रहे और उत्साहवर्धन करते रहे।

विश्व पुस्तक मेले के समापन के अवसर पर श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उपस्थित रहे। श्री विनय जी ने पुस्तक मेले के सभी कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए

- शेष पृष्ठ 4 पर

प्रगति मैदान नई दिल्ली में 4 से 12 जनवरी तक आयोजित हुए विश्व पुस्तक मेले में सभा के साहित्य स्टाल से वैदिक साहित्य खरीदते पुस्तक प्रेमी।

71वें गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी) पर विशेष

देशभक्तों ने सही यातना, तब हमने आजादी पाई

" कल प्रश्न था आजादी प्राप्त करना और आज चुनौती है आजादी को सुरक्षित रखना। आजादी की प्राप्ति में कितने देशभक्तों ने अपन सर्वस्व न्यौछावर किया, कितनी-कितनी यातनाएं सही, आज की युवा पीढ़ी को यह अवश्य ज्ञात होना चाहिए। गणतंत्र दिवस 2020 के राष्ट्रीय पर्व को हम धूम-धाम से तो मनाएं लेकिन यह अवश्य विचार करें कि हमारे अमर शहीदों की शहादत और बलिदान की कहानियां कितनी कष्टकारी थी? यहां प्रस्तुत है सैल्यूलर जेल की कोठरियों में बंद मां भारती के शेरों की संक्षिप्त अमर कहानियां "

यूनान, रोम, मिश्र मिट गए जहां से,
बाकी बचा है जग में, नामों-निशा हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।।

आजादी की पहली लड़ाई के देशभक्तों पर निर्दयता करने के बावपूद लायल कमेटी जिसने 20 जनवरी 1890 को अण्डमान का दौरा किया ने सुझाव दिया कि कारावास शासन प्रणाली, अवश्य ही दण्डात्मक एवं अपमानजनक होनी चाहिए और यह फांसी के फंदे से भी भयावह होनी चाहिए। तब सैल्यूलर जेल का निर्माण सन् 1896 में शुरू किया। इसको सन् 1906 में पूर्ण किया गया।

अलीपोर बम केश के देशभक्तों को सबसे पहले सैल्यूलर जेल की कोठरियों में सन् 1909 में बन्द किया गया। अगर एक बार जेल का दरवाजा खुल जाता था तो उसमें भारी मात्रा में देशभक्तों को बंद कर दिया जाता था। स्वराज साप्ताहिकी के चार संपादकों को भी निर्वासित किया गया। वीर सावरकर की गर्दन में दो आजीवन कारावास के बिल्ले डालकर साथ सैल्यूलर जेल में सन् 1911 में बंद कर दिया गया। उनको दोहरी सजा के तौर पर दूसरी मंजिल खंड नम्बर 7 की कोठरी नम्बर 123 में बंद कर दिया था। बहुत से दूसरे देशभक्त भी इस जेल की कोठरियों में बंद कर दिए गए थे।

डेविड बैरी और उसके चापलूसों ने देशभक्तों को एक सीमा से बढ़कर यातनाएं दी। उनको कमरतोड़ काम पर लगाया गया। उनसे प्रत्येक दिन तेल-मिल की ठौस धातु की छड़ी से धकेलकर जोकि कोल्हू के नाम से जानी जाती है। 20 पौण्ड नारियल का तेल या 20 पौण्ड सरसों का तेल निकलवाया जाता था। जैसे कि हमारे गांवों में बैलों से काम करवाया जाता था। वैकल्पिक तौर पर उनसे नारियलों की छिलाई और तोड़ने का काम लिया जाता था ये बहुत ही कठिन काम थे।

.....रामरक्खा (जिसको कुछ कागजातों में रामरक्षा के नाम से जाना गया है) को सन् 1917 हड़ताल के दिनों में सैल्यूलर जेल में बन्द किया गया। वह पंजाब का रहने वाला एक आर्य समाजी नवयुवक था जिसको सन् 1917 में दूसरे माण्डले षडयन्त्र केश में सेना में राजद्रोह फैलाने के जुर्म में दोषी करार दिया गया। सैल्यूलर जेल में बंद होने के बाद उसको जनेऊ उतारने के लिए कहा गया। जोकि उसने पहना हुआ था। उसके ऐसे करने से मना करने पर संरक्षकों द्वारा उसको जबरदस्ती उतार लिया गया। .... रामरक्खा ने अपने यज्ञोपवीत के निरादर के लिए समझौता नहीं किया। उसने भूख हड़ताल शुरू कर दी और पानी की एक बूंद भी पीने से मना कर दिया। सामान्यतया रबड़ की नली द्वारा जबरदस्ती नाक के द्वारा आहार दिया गया। एक महीने बाद उसकी छाती में दर्द शुरू हो गया। जो उसको मृत्यु के द्वार पर ले गया। रामरक्खा ने सैल्यूलर जेल में बन्द होने के दो महीने के अन्दर शहादत प्राप्त की। अन्ततः प्राधिकारियों को झुकना पड़ा और बाद में हिन्दू कैदियों को जनेऊ धारण करने की इजाजत दे दी गई।.....

- शेष पृष्ठ 5 पर

वेद-स्वाध्याय

नाना प्रकार के तेजों से अपने को महा तेजस्वी बनाना

यद् वर्चो हिरण्यस्य यद् वा वर्चो गवामुत।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा संसृजामसि।। - साम. 6/4/10
ऋषिः **सर्वादिशः।।** देवता - **विश्वेदेवाः।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **हिरण्यस्य** = वीर्य का **यत्** = जो **वर्चः** = तेज है **उत** = और **गवाम्** = इन्द्रियों का **यद् वा** जो कुछ **वर्चः** = तेज है तथा **सत्यस्य** = सत्यस्वरूप **ब्रह्मणः** = ब्रह्म का, ज्ञान का, वेद का **वर्चः** = जो तेज है **तेन** = उस सब तेज से **मा** = मुझे, अपने-आपको सं **सृजामसि** = पूरी तरह संयुक्त करता हूँ।

विनय - मैं पूरा वर्चस्वी बनूँगा, तेजस्वी बनूँगा। मैं प्रत्येक वस्तु से वर्चस् का संग्रह करूँगा और प्रत्येक प्रकार के वर्चस् का संग्रह करूँगा। असली हिरण्य जो वीर्य है, उसके वर्चस् से तथा गौओं, इन्द्रियों के वर्चस् से एवं सत्यस्वरूप ब्रह्म के वर्चस् से मैं अपने-आपको पूरी तरह संयुक्त कर लूँगा। हिरण्यों के, तैजस पदार्थों के सेवन द्वारा मैं शारीरिक वर्चस् को, वीर्य को अपने में उत्पन्न करूँगा तथा ब्रह्मचर्य द्वारा इस शरीर में संस्थापित कर लूँगा। मेरी इन्द्रियों में आत्मा (इन्द्र) द्वारा जो तेज आता है और जो इन्द्रियों के विषयभोगों में पड़ने से क्षीण होता रहता है, उस तेज को पाने के लिए मैं सत्यज्ञान के, वेदज्ञान के, सत्यस्वरूप ब्रह्म के तेज को अपनी आत्मा में धारण करूँगा। इस प्रकार ब्रह्मतेज पाकर जाग्रत् हुआ मेरा आत्मा अपने अनन्त तेज से चमक उठेगा और मेरे मन और देह को सहज में तेजोमय बना देगा। तब मैं संसार में एक चमकती हुई प्रदीप्त ज्योति की तरह फिरूँगा। जो कोई मेरे सम्पर्क में आएगा उसके भी शरीर-मन-आत्मा को प्रदीप्त, प्रज्वलित और उद्बुद्ध करता हुआ विचरूँगा। मैं वर्चोमय वर्चस्वी बन जाऊँगा।

-: **साभार** :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

धर्म की आड़ में सम्प्रदाय को बढ़ावा देने का प्रयास

धर्म, दलित और ईसाइयत

धर्म जब तक मनुष्य के सदव्यावहार, सदाचरण का आधार और निजी अनुभव तक सीमित रहे धर्म रहता है लेकिन जब धर्म के नाम के सहारे साम्राज्य खड़ा किया जाने लगे, जबदस्ती या बहला फुसलाकर सम्प्रदाय तैयार किये जाने लगे, तब वह धर्म न होकर संकीर्ण रूप धारण कर लेता है और निजी अनुभव की दुनिया से अलग हटकर संस्था का रूप लेते ही धर्म शासन जैसा बनने लगता है। लोग इसके नाम पर होने वाली उद्दंडता को ईश्वरीय मानने लगते हैं। ऐसे कई प्रश्न चिन्ह खड़े करते हुए पिछले दिनों पुअर क्रिश्चियन लिबरेशन मूवमेंट के अध्यक्ष आर.एल. फ्रांसिस का आलेख सामने आया था। फ्रांसिस ने अपने आलेख में आंकड़ों के साथ उल्लेख किया था कि किस तरह भारतीय समाज में गरीबी, अशिक्षा और असमानता का लाभ ईसाई मिशनरीज ने उठाकर जनसंख्या के एक हिस्से को ईसाई तो बना दिया लेकिन आज भी उनका जीवन किस तरह असमानता में बीत रहा है।

मसलन अभी तक जो दलित सिर्फ दलित था जिसके साथ कुछ स्थानों पर जातीय भेदभाव था, उसे ईसाई तो बना दिया गया पर इससे उसका जातीय भेद कम नहीं बल्कि अब वह जातीय दंश के साथ धार्मिक दंश भी झेल रहा है। ऊंच-नीच, असमानता और भेदभाव पीड़ित रहे करोड़ों दलितों, आदिवासियों और सामाजिक हाशिए पर खड़े लोगों को चर्च और क्रूस तक तो ले आये, लेकिन यहाँ लाकर आज चर्च उनके जीवन स्तर को सुधारने की बजाय अपने साम्राज्यवाद के विस्तार में व्यस्त है और अनुयायियों की स्थिति से पल्ला झाड़ते हुए उन्हें सरकार की दया पर छोड़ना चाहता है।

दरअसल चर्च का इरादा एक तीर से दो शिकार करने का है, कुल ईसाइयों की आबादी का आधे से ज्यादा अपने अनुयायियों को अनुसूचित जातियों की श्रेणी में रखवा कर वह इनके विकास की जिम्मेदारी सरकार पर डालते हुए देश की कुल आबादी के पाचवें हिस्से हिन्दू दलितों को ईसाइयत का जाम पिलाने का ताना-बाना बुनने में लगा है। यह सही है कि यूरोप, अमेरिका एवं अफ्रीकी देशों में ईसाइयत का बोलबाला है। राजसत्ता के विस्तार के साथ ही ईसाइयत का भी विस्तार हुआ है। किन्तु हमारे देश भारत में भी यीशु के शिष्य संत थोमस ईसा की मृत्यु के दो दशक बाद ही प्रचार के लिए आ गये थे। कोई बड़ी सफलता उन्हें नसीब नहीं हुई पर पिछली कुछ शताब्दियों में झूठ, पाखण्ड और यीशु के चमत्कारों के किस्से सुना-सुनाकर जातीय भेदभाव का लाभ उठकर, भी ईसाइयत ने यहां अपनी वो जड़ें जमाने में वो कामयाबी नहीं पायी जो यूरोप और अमेरिका में चंद वर्षों के भीतर पाई थी।

आज भारत में कैथोलिक चर्च के 6 कार्डिनल हैं पर कोई दलित नहीं, 30 आर्च बिशप में कोई दलित नहीं, 175 बिशप में केवल 9 दलित हैं। 822 मेजर सुपिरयर में 12 दलित हैं, 25000 कैथोलिक पादरियों में बहुत छोटी संख्या में दलित ईसाई पादरी हैं वो भी आदिवासी व बीहड़ इलाकों में। पिछले दिनों इतिहास में पहली बार भारत के कैथलिक चर्च ने यह स्वीकार किया है कि जिस छुआछूत और जातिभेद के दंश से बचने को दलितों ने हिंदू धर्म को त्यागा था, वे आज भी उसके बड़े स्तर पर शिकार हैं। जहां कथित तौर पर उनको वैश्विक ईसाईयत में समानता के दर्जे और सम्मान के वादे के साथ शामिल कराया गया था।

उत्पीडन का शिकार हुए दलित ईसाइयों के एक प्रतिनिधिमंडल ने कुछ साल पहले संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान की मून के नाम एक ज्ञापन देकर आरोप लगाया था कि कैथोलिक चर्च और वेटिकन दलित ईसाइयों का उत्पीड़न कर रहे हैं। जातिवाद के नाम पर चर्च संस्थानों में दलित ईसाइयों के साथ लगातार भेदभाव किया जा रहा है। यानि जो भेदभाव की गुहार अभी तक भारत सरकार से लग रही थी, धर्मान्तरण के बाद अब वह गुहार यूरोप और वेटिकन में लगाई जा रही है। लेकिन शायद इन्हें मालूम नहीं कि पॉप और उनका यीशु बहरा है वह सिर्फ गोरी चमड़ी के यूरोपीय लोगों की गुहार सुनता है। अगर गरीब असहाय और अश्वेतों की गुहार सुनता तो अफ्रीका अमेरिका और यूरोपीय देशों समेत दुनिया के कई देशों ने रंग भेद का

.....यदि किसी काल या कारणवश हिन्दू समाज में भेदभाव से लेकर कोई कुरीति जन्मीं तो उसे दूर करने के लिए इसी समाज में लोग सामने भी आये, आदि गुरु शंकराचार्य से लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती तक अनेकों महापुरुषों से हमारा इतिहास और सुसज्जित है। लेकिन इसके विपरीत ईसाई समाज में सामाजिक आंदोलन नहीं के बराबर है। ओडिशा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, बिहार, झारखंड़, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पूर्वी राज्य या यों कहे कि पूरे भारत में दलित ईसाइयों का आपसी जातीय भेदभाव चरम पर है। पादरी खमोश है, उनका काम नये लोगों का धर्मान्तरण करना है उनकी जातीय पीड़ा या गरीबी उनके लिए कोई मायने नहीं रखती क्योंकि ईसाइयत और चर्च का का मूल उद्देश्य सिर्फ धर्मांतरण रह गया है। .....

शर्मनाक इतिहास न होता। दक्षिण अफ्रीका ने रंगभेद को कुबूला, जर्मनी ने स्वीकार किया, कनाडा ने शोषण का शिकार हुए अश्वेत लोगों से अब माफी मांगी। अमेरिका ने सदियों से अश्वेतों के खिलाफ हुई हिंसा भेदभाव को अब तक सार्वजनिक तौर पर स्वीकार नहीं किया।

लेकिन इसके विपरीत मध्यकाल में मुगल शासन के दौरान जो जातीय भेदभाव उपजा, अंग्रेजी शासन ने इसका लाभ उठाया, किन्तु जैसे ही भारत को आजादी मिली तुरंत समानता का अधिकार और दबे कुचले लोगों को आरक्षण दिया। यहाँ तक कि भारतीय संविधान में ईसाई एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के नागरिक रहे हैं, यहां के चर्च को जो खास सहूलियतें दी, वे बहुत से ईसाइयों को यूरोप एवं अमेरिका में भी हासिल नहीं हैं। विशेष अधिकार से शिक्षण संस्थान चलाने, सरकार से अनुदान पाने की सहूलियतें शामिल हैं। इन सुविधाओं के बावजूद भारतीय चर्च धर्मान्तरण कर ईसाई बने लोग छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर वेटिकन का मुंह ताकते रहते हैं। जबकि ईसाईयत से ज्यादा भरोसा और लाभ भारत का संविधान उन्हें प्रदान करता है।

व्यवस्था में कभी अव्यवस्था हो जाती है, भले समाज में भी बुरे लोग पनप जाते हैं। यदि किसी काल या कारणवश हिन्दू समाज में भेदभाव से लेकर कोई कुरीति जन्मीं तो उसे दूर करने के लिए इसी समाज में लोग सामने भी आये, आदि गुरु शंकराचार्य से लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती तक अनेकों महापुरुषों से हमारा इतिहास और सुसज्जित है। लेकिन इसके विपरीत ईसाई समाज में सामाजिक आंदोलन नहीं के बराबर है। ओडिशा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, बिहार, झारखंड़, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पूर्वी राज्य या यों कहे कि पूरे भारत में दलित ईसाइयों का आपसी जातीय भेदभाव चरम पर है। पादरी खमोश हैं, उनका काम नये लोगों का धर्मान्तरण कराना है, उनकी जातीय पीड़ा या गरीबी उनके लिए कोई मायने नहीं रखती क्योंकि ईसाइयत और चर्च का का मूल उद्देश्य सिर्फ धर्मांतरण रह गया है। अब यही समय है जब दलित समुदाय को धर्मान्तरण से पहले ईसाइयत की सामाजिक समरसता का परीक्षण करना चाहिए, साथ ही दुनियाभर में धार्मिक राष्ट्र की सत्ता कायम करने का ख्वाब दिखाने वाले चर्चों की चाल को समझना चाहिए, अपने मूल धर्म और विवेक की सत्ता को किसी विदेशी ठेकेदार के हवाले करने से पहले सोचना होगा कि वह सिर्फ उनका धार्मिक शिकार है शिकारी नहीं। - ***सम्पादक***

ईरान-अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव के व्यापक असर पर एक नजर

ईरान-अमेरिका युद्ध हुआ तो क्या होगा?

.....देखा जाये तो इस लड़ाई में ईरान के पास जो ताकत है वह है उसके सशस्त्र बल रिवोल्यूश्नरी गार्ड द्वारा तैयार किये संगठित संगठन है जो यमन ईराक फिलिस्तीन समेत कई देशों में फैले है। हिजब्बुलाह की बात करें तो इस संगठन की नींव लेबनान के गृहयुद्ध के दौरान 1980 के दशक में रखी थी। आज यह इलाके का सबसे प्रभावशाली हथियारबंद गुट है जो ईरान के प्रभाव को इजराइल के दरवाजे तक ले जा सकता है। इस गुट के पास रॉकेट और मिसाइलों के अलावा कई हजार अनुशासित लड़ाके हैं जिनके पास जंग लड़ने का खूब अनुभव है। पिछले छह साल से सीरिया में लड़ रहा हिजबुल्लाह जंग के मैदान में अपनी काबिलियत को दिखा कर रहा है। .....

ईरान और अमेरिका की जंग को लेकर कई कयास लगाये जा रहे हैं कि अगर यह युद्ध हुआ तो किसकी हार होगी, किसकी जीत। किसके दम पर ईरान एक सुपर पावर को आँख दिखा रहा है। आज यह सवाल दुनिया भर में सोशल मीडिया से लेकर सभी जगह छाए हुए है. लेकिन अगर इस मामले को थोडा पीछे जाकर देखें तो 16 मई 2019 को लेबनान की राजधानी बेरुत में कट्टरपंथी संगठन हिजबुल्लाह के नेता नसरल्लाह ने ईरान की इस्लामिक क्रांति के 40 वर्ष पूरे होने पर एक बड़ी रैली में मजबूती से संदेश दिया था कि अगर अमेरिका ईरान से युद्ध छेड़ता है तो इस लड़ाई में ईरान अकेला नहीं होगा, क्योंकि हमारे इलाके का भविष्य इस्लामिक रिपब्लिक से जुड़ा है। शायद इन पिछले लगभग सात महीनो में अमेरिका और ईरान की जबानी जंग के बीच ईरान ने लेबनान से लेकर सीरिया, इराक, यमन और गजा पट्टी तक में हिजबुल्लाह जैसे हथियारबंद गुटों में हजारों शिया लड़ाके इक्कठे किये जो ईरान के प्रति निष्ठा जताते हैं। जिसका नतीजा अब देखने को मिल रहा है 3 जनवरी को इराक में बगदाद हवाई अड्डे पर अमेरिकी हवाई हमले में ईरानी कमांडर कासिम सुलेमानी की हत्या होने बाद ईरान ने बदला बताते हुए अमेरिका के कई सैन्य ठिकानों पर हमला किया गया। इससे साफ हो जाता है कि हिजबुल्लाह जैसे हथियारबंद गुटों ने अपना काम करना शुरू कर दिया है। इस बात की पूरी आशंका है कि अमेरिका के साथ चल रहा तनाव अगर युद्ध की परिणति तक पहुंचता है तो वह इन लड़ाकों को एकजुट कर इनका बड़ा इस्तेमाल करेगा। ईरान द्वारा किये हमलों से संदेश दिया कि ईरान अब अमेरिकी द्वारा मध्य पूर्व में खिंची रेखाओं का उल्लंघन करेगा और न जाकर पीछे से युद्ध में शामिल होगा। क्योंकि ईरान द्वारा किये हमलें में देखा जाये तो कोई भी मिसाइल ऐसी जगह ऐसे समय नहीं दागी गयी जिससे अमेरिका को भारी नुकसान हो। ईरान ने जानबूझकर ऐसा किया है ताकि जो युद्ध का संकट मंडरा रहा है वह कहीं नियंत्रण से बाहर न हो जाए।

ईरान सिर्फ अपने लोगों की तस्सली भर के लिए ऐसे जोखिम उठा रहा है। ताकि ईरान और सऊदी के मध्य चली आ रही इस्लामी वर्चस्व की इस जंग में कहीं ईरान से जुड़े शिया बाहुल देश और कट्टरपंथी संगठन उसे कमजोर न समझ ले। क्योंकि पिछले कई महीनों में ईरानियों ने होर्मुज की खाड़ी पर अमेरिकी निगरानी ड्रोन को मार गिराया था, एक ब्रिटिश तेल टैंकर को जब्त कर लिया था और सऊदी अरब के तेल के बुनियादी ढांचे आरमको पर बमबारी की थी। इसके बाद 27 दिसंबर हिजबुल्लाह ने अमेरिकी ठेकेदार की हत्या कर दी और इराक के किरकुक प्रांत में अमेरिकी ठिकाने के पास रॉकेट हमले में कई अमेरिकी और इराकी सैन्य व्यक्तियों को घायल कर दिया था।

देखा जाये तो इस लड़ाई में ईरान के पास जो ताकत है वह है उसके सशस्त्र बल रिवोल्यूश्नरी गार्ड द्वारा तैयार किये संगठित संगठन है जो यमन ईराक फिलिस्तीन समेत कई देशों में फैले हैं। हिजब्बुलाह की बात करें तो इस संगठन की नींव लेबनान के गृहयुद्ध के दौरान 1980 के दशक में रखी थी। आज यह इलाके का सबसे प्रभावशाली हथियारबंद गुट है जो ईरान के प्रभाव को इजराइल के दरवाजे तक ले जा सकता है। इस गुट के पास रॉकेट और मिसाइलों के अलावा कई हजार अनुशासित लड़ाके हैं जिनके पास जंग लड़ने का खूब अनुभव है। पिछले छह साल से सीरिया में लड़ रहा हिजबुल्लाह जंग के मैदान में अपनी काबिलियत को दिखा कर रहा है।

इसके अलावा पिछले कुछ वर्षो से सऊदी अरब और अमेरिका के लिए सिर बने यमन के शिया विद्रोही जिन्हें हूथी के नाम से जाना जाता है वह भी ईरान के साथ कन्धा मिलाकर खड़ा है। ईरान द्वारा उन्हें हथियार दिए हैं, इनमें लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइलों की भी बात कही जाती है जिन्होंने सऊदी अरब की राजधानी रियाद पर भी पिछले सालों में हमले किए हैं। अगर अमेरिका और ईरान युद्ध के मुहाने पर पहुंचते है तो फलस्तीनी संगठन गजा का हमास और दूसरे छोटे शिया इस्लामिक जिहादी गुट भी ईरान की ओर से इजराइल पर हमले से लेकर अनेकों विरुद्ध गतिविधियों को अंजाम देने से पीछे नहीं हटेगा। हालाँकि माना जाता है कि ईरान इन गुटों को सैन्य मदद तो दे रहा है लेकिन इस गुट को आर्थिक ज्यादा मदद कतर से मिल रही है। ऐसे में उम्मीद कम है कि यह क्षेत्रीय युद्ध की स्थिति में ईरान के साथ जाएगा। लेकिन मजहब के नाम पर सुन्नी चरम पंथियों का यह गुट इस्लामिक जिहाद के लिहाज से ईरान के ज्यादा करीब है।

इसके अलावा इराक में शिया मिलिशिया गुट पीएमएफ भी ईरान के साथ इस लड़ाई में शामिल हो सकता है। एक दशक से यह गुट इस्लामिक स्टेट से लड़ता आया है। खास बात ये है कि इस गुट में असैब अहल अल हक, कातेब हिजबुल्लाह और बद्र संगठन शामिल हैं। इन तीनों का नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथ में है जिनके जनरल कासेम सुलेमानी से करीबी संबंध थे। सुलेमानी की मौत का बदला लेने को ये गुट ईरान के साथ शामिल हो सकता है। कुल मिला कर इनमें करीब 1 लाख 40 हजार लड़ाके हैं। भले ही यह संगठन औपचारिक रूप से इराकी प्रधानमंत्री के प्रशासन में है लेकिन राजनीतिक रूप से पीएमएफ के लोग ईरान के साथ जुड़े हैं। हालाँकि एक समय अमेरिकी सेना और पीएमएफ इस्लामिक स्टेट से जंग में मिल कर लड़े थे लेकिन अब यह दोस्ती लगभग टूट चुकी है। इसी का लाभ ईरान को मिल रहा है। पिछले कुछ वर्षो में ईरान ने सऊदी से लगते देशों में अपनी मजबूत पैठ तैयार की है। इन्ही के बल पर ईरान अमेरिका को आँख दिखा रहा है। देखना यही होगा कि 7 जनवरी को आई ईरानी मिसाइल हमलों को देखते हुए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प कैसे जवाब देंगे? और नाटो के सदस्य देश अमेरिकी राष्ट्रपति के मध्य पूर्व के इस युद्ध में शामिल होने के उनके अनुरोध का जवाब कैसे देंगे? - ***राजीव चौधरी***

प्रेरक प्रसंग

झालावाड़ शास्त्रार्थ की एक घटना

राजस्थान में झालावाड़ के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में एक जयदेव शर्मा नाम के पण्डित को भी उनसे शास्त्रार्थ करना पड़ा। अपनी झेंप मिटाने के लिए श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए पण्डित जयदेव ने कहा था कि ''आप यह न समझें कि जयदेव हार गया है। कल पुन: शास्त्रार्थ होगा, उसमें पण्डित गणपतिशर्मा जो कुछ कहेंगे हम उसका प्रत्यक्षर खण्डन करेंगे।''

इस पर पण्डित गणपतिजी शर्मा ने कहा कि शास्त्रार्थ में जय-पराजय का कोई प्रश्न नहीं होता। शास्त्रार्थ का उद्देश्य सत्य-असत्य का निर्णय करना होता है। इस समय जयदेवजी ने एक बड़ी विचित्र प्रतिज्ञा कर ली है। कल वे मेरे प्रत्यक्षर का खण्डन करेंगे। मान लीजिए मैंने कह दिया कि पण्डितजी अपने माता-पिता की सन्तान हैं तो उन्हें प्रतिज्ञानुसार तुरन्त मेरे इस कथन का प्रतिवाद करना पड़ेगा कि वे कदापि अपने माता-पिता की सन्तान नहीं है। मेरी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी यह प्रतिज्ञा पूर्ण न हो सके।

इसपर श्रोताओं ने बहुत ताली बजाई। हँसते-हँसते सबके पेट में बल पड़ गये। पण्डित जयदेवजी पर घड़ों पानी पड़ गया। जयदेव ने स्वयं एक बार अपने एक आत्मीय जन से कहा था कि उसे इस शास्त्रार्थ में पण्डित श्री गणपतिजी शर्मा के सामने इतना लज्जित होना पड़ा था कि छह मास तक उसके लिए घर से बाहर पाँव धरना अति कठिन हो गया।

झालवाड़ा का यह शास्त्रार्थ तत्कालीन कई हिन्दी-उर्दू पत्रों में प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार के प्रकाण्ड पण्डित गणपतिजी के निधन पर श्री नाथूरामशंकर ने यथार्थ ही लिखा था-

आपदा की आग ने उबाले शोक-सागर में,
हाय रे अनभ्र वज्रपात का प्रमाण है।
छेद रहा सैकड़ों वियोगियों की छातियों को,
एक ही वियोगजन्य वेदना का बाण है।।
काल विकराल ने कुचाल की कृपाण गही,
क्यों न प्रेम कातर कटेंगे कहाँ त्राण है?
शंकर मिलावेगा मिलेंगे परलोक ही में,
प्राणहारि प्यारे गणपति का प्रमाण है।।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

वैदिक साहित्य की चली लहर, सत्यार्थ प्रकाश ....

स्टाल पर पधारने पर मौलाना का स्वागत एवं बच्चों को विभिन्न कॉमिक्स का सैट भेंट करते महामन्त्री श्री विनय आर्य जी। जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करते स्वामी सम्पूर्णानन्द जी। पुस्तक मेले के समापन के अवसर पर समयदान करने वाले कार्यकर्ताओं के साथ संयोंजक डॉ. मुकेश आर्य, सहसंयोजक श्री सुखबीर सिंह आर्य, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं अन्य महानुभाव

कहा कि पुस्तक मेला वैदिक धर्म, चिंतन एवं आर्य विचारों के प्रचार- प्रसार का सशक्त माध्यम है। आर्य समाज के सिद्धांत और मान्यताओं तथा गतिविधियों के विस्तार में अहम भूमिका निभाता है। यह कार्य अपने आपमें बहुत महत्वपूर्ण है। आप सबने पूरी निष्ठा के साथ अपना दायित्व निभाया। इसके लिए सबको बहुत-बहुत बधाई और आभार।

- डॉ. मुकेश आर्य, संयोजक

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनिया (झाबुआ) के निर्माणाधीन नए छात्रावास का निरीक्षण

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्र झाबुआ के बामनिया में संचालित महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के निर्माणाधीन नए छात्रावास का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, बामनिया विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री प्रवीण आत्रेय जी एवं अन्य।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौडगढ़ (राज.) में स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़ गढ़ (राज.) में स्वाध्याय एवं साधना शिविर का आयोजन 26 दिसंबर से 30 दिसंबर 2019 तक, डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, मुम्बई तथा आचार्य श्री कर्मवीर जी रोजड़ गुजरात वाले तथा भजनोपदेशक श्री अमर सिंह जी ब्यावर वाले के सान्निध्य में किया गया। गुरुकुल की आचार्या डॉ. सीमा श्रीमाली एवं अध्यक्ष श्री देवेंद्र शेखावत ने शिविर की सुंदर व्यवस्था की। इस शिविर में लगभग 53 शिविरार्थियों ने भाग लिया। इस शिविर की विशेषता यह रही कि इसमें सभी वर्ग के साधकों ने भाग लिया। साधकों के लिए स्वाध्याय, ध्यान-योग, शंका समाधान, शुद्ध मंत्र उच्चारण एवं आत्म चिंतन का अभ्यास कराया गया। बच्चों के लिए भाषण प्रतियोगिता, नित्य कर्म, क्रीडा, शंका समाधान आदि का इस शिविर में विशेष प्रबंध किया गया था। इस शिविर में दिल्ली दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री सुखबीर सिंह आर्य एवं श्री सुरेशचंद्र गुप्ता तथा अन्य श्री नवनीत अग्रवाल आदि ने पहुंचकर शिविर का अवलोकन किया एवं शिविर में स्वाध्याय एवं ध्यान योग का अभ्यास भी किया। डॉ. श्री सोमदेव शास्त्री ने बहुत ही सरल शब्दों में साधकों का मार्गदर्शन किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री सुरेशचंद्र गुप्ता ने सभा द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे में संक्षिप्त में बताया।

स्वाध्याय शिविर में साधकों को साधना का महत्व बताते हुए आचार्य जी। समापन समारोह के अवसर पर सम्बोधित करते श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, साथ में है श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी एवं आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी एवं साधना शिविर में उपस्थित शिविरार्थी।

आर्यसमाज के सेवा संस्थान 'सहयोग' द्वारा यज्ञ का आयोजन

दिसंबर के बाद जनवरी 2020 में भी लगातार सर्दी कम होने का नाम ही नहीं ले रही है। इस कड़कड़ाती सर्दी का दुष्प्रभाव ज्यादातर उन लोगों पर होता है जिनके पास गर्म वस्त्रों का अभाव है। आज भी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में और राजधानी दिल्ली में बहुत से ऐसे लोग हैं जिनके पास ओढ़ने-बिछाने और पहनने के गर्म वस्त्रों की अत्यंत कमी है, उनके पास सर्दी से बचाव के लिए जूते, चप्पल तक नहीं हैं। ऐसे सभी जरूरतमंद लोगों के बीच जाकर सहयोग लगातार गरम वस्त्रों के वितरण का कार्य कर रहा है। 5 जनवरी 2020 को "स्वर्ण जयंती कालोनी, टीकरी खुर्द" में सहयोग की टीम जैसे ही पहुंची तो वहां पर पौराणिक मंदिर में भजन, कीर्तिन का कार्यक्रम चल रहा था, सहयोग की टीम ने वहां यज्ञ करने का विचार व्यक्त किया तो सब लोग विरोध करने लगे। लेकिन बाद में समझाने पर वहां उपस्थित महिलाओं और बच्चों ने यज्ञ में आहुति दी। वैदिक यज्ञ, भजन और प्रवचन के कार्यक्रम से वहां उपस्थित सभी लोग बहुत प्रभावित हुए। इस कार्यक्रम में सम्मिलित सभी महिलाएं, बच्चे और पुरुषों ने आगामी 19 जनवरी को पुन: यज्ञ के आयोजन का सहयोग से निवेदन किया तथा सहयोग से जुड़ने की भी इच्छा जताई।

प्रथम पृष्ठ का शेष

देशभक्तों ने सही यातना, तब हमने आजादी .....

यदि काम की वांछित मात्रा दिन के अन्त तक पूरी नहीं की जाती थी तो उनको गालियां दी जाती थी। अपमान किया जाता था। हथकड़ी और खड़ी बेड़ियों इत्यादि द्वारा सजाएं दी जाती थी। उनके साथ सामान्य कैदियों से ज्यादा बुरा व्यवहार किया जाता था। उनकी गर्दनों पर 'डी' (खतरनाक) या पी.आई. (स्थायी कैदी) के बिल्ले लटका दिए जाते थे। जब वे बीमार होते थे तो उनको डॉक्टरी ईलाज प्रदान नहीं किया जाता था और उनकी यह कहकर उपेक्षा कर दी जाती थी कि वे बहाने बना रहे हैं।

उनको जो खाना दिया जाता वह न केवल अप्रयाप्त मात्रा में होता था बल्कि घटिया किस्म का भी होता था। अकसर खाने में मरे हुए कीड़े-मकोड़े पाए जाते थे और देशभक्तों की आंखों के सामने उनके खाने में पसीना पड़ता रहता था। उनको यह खाना खाने के लिए पंक्तियों में बैठाकर मजबूर किया जाता था और अपने बैठने के स्थान से थोड़े भी इधर-उधर होना या हिलना-डुलना अपने लिए गालियों और बेंत की मार को आमंत्रित करना था।

रात में उनको केवल एक कटोरा पेशाब करने और शौच के लिए दिया जाता था और इस प्रक्रिया में अगर कोठरी का फर्श गंदा हो जाता था तो उनको गालियां दी जाती और अपमानित किया जाता था और उनकी चाबुक से पिटाई की जाती थी।

इस यातनापूर्वक व्यवहार से तंग आकर एक बंगाली देशभक्त इन्दु भूषण राय ने 28-29 अप्रैल, 1912 की मध्य रात्रि को आत्महत्या कर ली। जबकि एक दूसरे बंगाली देशभक्त उलासकर दत्त को उन दिनों में लगभग पागल कर दिया गया

था। देशभक्तों ने उचित जवाब देने के बारे में सोचा। नानी-गोपाल ने निष्क्रिय तौर पर विरोध करना शुरू कर दिया और उतना ही काम किया जितना वह बगैर दबाव के कर सकता था।

नानी गोपाल ने उनके साथ किए गए बुरे व्यवहार का खुलेआम विरोध किया। होटी लाल उनके बुरे व्यवहार के बारे में देशवासियों को एक पत्र गुप्त रूप से एक साधारण कैदी के द्वारा सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी बंगाली के सम्पादक को भेजकर बताने में कामयाब रहा। देशभक्तों ने हड़ताल और भूख हड़ताल करनी शुरू कर दी। जिससे जेल अधिकारी राजनैतिक कैदियों को सन् 1914 में उनके वतन प्रत्यावर्तन के लिए मजबूर हो गए। केवल सावरकर भाईयों और बामन राव जोशी को वापिस नहीं भेजा गया। क्योंकि बी.डी. सावरकर को इस अशांति का दाता माना गया था।

जेल को सन् 1915 में राजनैतिक कैदियों को निर्वासित करने के लिए दोबारा खोला गया। उनमें गदरी देशभक्त भी शामिल थे। उनके साथ पहले जैसा बहुत निर्दयतापूर्वक व्यवहार किया गया। परन्तु देशभक्त लोह पुरुष थे। उन्होंने बहुत असाधारण साहसिक कार्य किए थे। जून 1917 में एक गदरी देशभक्त बाबा भानसिंह को हथकड़ी लगाई गई। उसको कोठरी में बन्द कर दिया गया। वह यह शब्द जोर-सोर से गा रहा था-

जो तो प्रेम खेलन का चाहो
सिर धर गली मेरी आओ।

वह हथकड़ियों को कोठरी के लोहे की शलाखों के साथ मारकर मिलता-जुलता संगीत निकालता था। उसका दोष केवल इतना था कि जब जेलर निरीक्षण के लिए आया तो वह खड़ा नहीं हुआ। उसकी बेरहमी से पिटाई की गई। वह एक महीने के अन्दर शहीद हो गया।

दूसरी घटना जेल के अधिकारियों की राजनैतिक कैदियों के प्रति क्षुधातुर प्रवृत्ति को दर्शाती है जिससे कि उनकी देशभक्ति की भवना को हानि पहुंचे।

रामरक्खा (जिसको कुछ कागजातों में राम रक्षा के नाम से जाना गया है) को सन् 1917 हड़ताल के दिनों में सैल्यूलर जेल में बन्द किया गया। वह पंजाब का रहने वाला एक आर्य समाजी नवयुवक था जिसको सन् 1917 में दूसरे माण्डले षडयन्त्र केश में सेना में राजद्रोह फैलाने के जुर्म में दोषी करार दिया गया। सैल्यूलर जेल में बंद होने के बाद उसको जनेऊ उतारने के लिए कहा गया। जोकि उसने पहना हुआ था। उसके ऐसे करने से मना करने पर संरक्षकों द्वारा उसको जबरदस्ती उतार लिया गया।

रामरक्खा ने अपने यज्ञोपवीत के निरादर के लिए समझौता नहीं किया। उसने भूख हड़ताल शुरू कर दी और पानी की एक बूंद भी पीने से मना कर दिया। सामान्यतया रबड़ की नली द्वारा जबरदस्ती नाक के द्वारा आहार दिया गया। एक महीने बाद उसकी छाती में दर्द शुरू हो गया। जो उसको मृत्यु के द्वार पर ले गया। **रामरक्खा ने सैल्यूलर जेल में बन्द होने के दो महीने के अन्दर शहादत प्राप्त की। अन्ततः प्राधिकारियों को झुकना पड़ा और बाद में हिन्दू कैदियों को जनेऊ धारण करने की इजाजत दे दी गई।**

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी सम्पूर्ण भारतवर्ष गणतंत्र दिवस धूम-धाम से मना रहा है। लेकिन इन अनमोल क्षणों में उन शहीदों को जरूर स्मरण करना चाहिए जिन्होंने असहनीय पीड़ा को सहन किया था। उन्होंने हंसते-हंसते दु:ख-दर्द झेलकर ही हमें आजादी का अमृत स्वाद चखाया। उन सबका अभिनन्दन है, वन्दन है और उन्हें शत-शत नमन स्वीकार हो।

- आचार्य अनिल शास्त्री

आर्यसमाज विधान सरणी कोलकाता का 134वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने दिया प्रेरक उद्‌बोधन

गत दिनों आर्यसमाज विधान सरणी कोलकाता का 134वां वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। आर्यसमाज विधान सरणी कोलकाता की ओर से प्रधान जी का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर उन्होंने आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज के उत्थान के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आगे आना चाहिए। वेद और महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं के द्वारा ही मानव समाज का कल्याण सम्भव है। इसके लिए जरुरी है कि हमें वैदिक ज्ञान धारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए स्वयं तप-त्याग, स्वाध्याय और सत्संग को अपनाना चाहिए। बंगाल की भूमि वीर भूमि है यहां से अनेक महान चिन्तक, लेखक, कवि, मनीषि और ज्ञानियों ने भारत का नाम विश्व में रोशन किया है। अत: हम सबको आर्यसमाज विधानसरणी कोलकाता के 134वें वार्षिकोत्सव पर संकल्प लेना चाहिए कि हम सदैव संसार का उपकार करने के लिए तत्पर रहेंगे। अपने वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित भाव रखेंगे।

अन्त में आर्यसमाज के प्रधान जी ने समस्त आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया। - *मन्त्री*

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

पुस्तकें
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-110001
मो. 9540040339

Continue from last issue

Creation

The creater, sustainer and dissolver of this Creation is God Himself and none else. He is the Lord of it and it all happens within his vast expanse.

Before the creation of this universe, all this was enveloped in stark darkness from all around, unintelligible like a dark night, spreadout like space, as also limited like it. God turned it into a 'created' thing, from that elementary "causative' stage, and turned it into different formations He was the lord of it, even before its manifestation in different forms. He alone has the power to create all the past, present and future creations, remaining different and aloof from animate Soul and Nature and inanimate elements, and yet involving Himself within it, which is an attribute of Soul or *Jivatman.*

Thus, there are different causes of this creative process. - God, Soul and Nature or *Prakriti*. From amongst them, 'God creates it as a 'causative' creator, without involving within it; *'Prakriti'* is the ingredient *'material cause'*, changeble into different forms; and 'Soul' or *'Atman'* as a "general causative', because he alone selects and uses different created materials towards his own ends, and thus,. involves himself within the functioning of this universe or creation. Therefore, it is totally mischievious to call GOD alone as the sole 'Cause' of this universal creation. And it is also against the proclamations of *Vedas*.

It must be understood that 'Omnipotence' of God does not mean that He is capable of creating the other two 'cause-elements' as well. Nay, they are independent causes. God's omnipotence means only that He can fulfil all His actions without any help from without. He is formless, Has the form carries its own attributes related to time and space, etc., and thereby contradicts the theory of 'Omnipre- sence' of GOD. And it is due to this formlessness alone that being Omnipresen. He carries all the universal activity within his embryo.

As the creation is massive as well as non-moving, its 'ingredient-cause' must also be of the same nature; because the result must conform with its own cause. Even God cannot contravene this principle. No doubt, a creater or an agent is needed for causing such a result, because no action is possible without the 'agent'. It must also be noted in this connection that the nature or Prakriti is eternal only in its preliminary 'minutest' form' as the created 'forms' are borne out by the principles of 'combi- nation' and 'separation' generating and destroying the forms', respectively. And no generating thing can become eternal, as it will naturally be destroyed as well. This minute and unseen nature has to pass through many stages to come into visual 'forms'. Through God causes all this conversion, i. e. 'creation' still He remains unattached and thereby uninvolved and unaffected by birth and death which is the result of the processes known as 'Combination' and 'Separation'. It is God, Who allots and associates different 'bodies' to different 'souls', according to their qualities, attributes,' actions and nature.

This creative process is a complicated one. In the begining of all the creations, simultaneously several pairs of young people are created as the result of the kindness. of God and without going through the sexual reproduction. Thereafter, the process of sexual reproduction starts, as a rule.

This current history on our planet, i.e. this earth,. started with the first emergence of man in Tibbet. Human race is one, though man has divided it into several divisions based on region, religion, etc., due to his own ignorance and shortsightedness. The manmade divisions are that *'Arya* and *Dasyu'* based on their good and bad actions, respectively, and of *'Dvija'* and *'Shudra'*, based on their being 'educated and skilled' and 'uneducated or unskilled', etc. Therefore, it is wrong to divide the humau race into Aryans and Non-Aryans and the like. It is also wrong to say that the historic fight between Gods ann demons was. fought, while Aryans started entering India. It was fought on the other hand, between the Indian kings, like Dashratha, and the kings of the bordering countries, who did not follow the teachings of the Vedas, and thereby believed and indulged in plundering and attacking other people. It is for these countries that the term *Malechh* has been used. Some of the oldest kings of India were in the following general order: *Brahma, Virat, Manu. M arichi* & Brothers, *Svayambhhva* and six brothers, *Ikshvaku*, etc., in that order. They were the forerunners of this State of Aryavarta. This Aryavarta not only flouri- shed, but expanded to the farther limits, and also its kings became *Chakravarti* Emperors, ruling as well as having suzeran rights almost all over the globe. But now the same country has reached such depths that the foreigners have downtrodden it, and its remaining Indian rulers also are becoming more and more subordinate to them. One must remember that only the native rule, howsoever bad it might be, can really be best of all. A foriegn rule can never deliver joy and good, be that howsoever judicious. and protective. All this has been possible due to small quarrels over the questions of variations in language, education and social behaviour, etc. Unless these difference and quarrels end, no real progress could ever become possible.

Since the completion of the creation and the first reve- lation of the Vedas on this earth' more than One thousand nine hundred sixty million years have passed. God Himself is sustaining this universe, not the socalled incarnations of God, namely, *Varana. Seshanaga*, etc. This he does by running and sustaining it through certains rules and regulations, in the absence of which the whole of this process might be nullified totally. Not only our Earth, but certain other planets also have animate-creation on them- selves, with the possibility of variation in forms and natures, due to different reasons. The same *Vedas* are revealed everywhere and in the same form. One God can have only one set of Rules and Regulations.

To be continued......

With thanks By: "Flash of Truth"

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। - ***संयोजक***

पारिवारिक मिलन पिकनिक का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सभा अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं के पारिवारिक परिचय समारोह (पिकनिक) का आयोजन 26 जनवरी, 2020 को किया जा रहा है।

सभा के माननीय अधिकारीगण, सदस्यं एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता महानुभाव जो इसमें भाग लेना चाहें वे कृपया **श्री सतीश चड्डा जी,** महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली से **मो. नं. 9313013123/9540041414 से सम्पर्क करें।**

- ***विनय आर्य, महामत्री***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे -

13. श्रीमती राजवती आर्या लाडो 1100
14. श्री ओमदत्त पांचाल 500
15. श्री वेदव्रत 500
16. डॉ. रवीन्द्र निरवाल एडवोकेट 500
17. गुप्तदान 500
18. श्री सोमदेव मल्होत्रा 1000
19. आर्यसमाज यमुना विहार 500
20. श्रीरंग विष्णु सुद्रिक 1000
21. आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन 4000
22. आर्यसमाज तिलक नगर 4000
23. आर्यसमाज अमर कालोनी 2000

- क्रमशः

आप भी पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य पर देने के लिए अपनी ओर से सहयोग प्रदान करें। 100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

90वें स्थापना दिवस पर
आर्य भजन-प्रवचन

आर्य समाज बिरला लाईस कमला नगर द्वारा 29 जनवरी 2020 को आर्यसमाज का 90वां स्थापना दिवस सायं 5:30 से रात्रि 9 बजे तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर पं. कुंवरपाल शास्त्री जी ब्रह्मत्व में यज्ञ, आचार्य छविकृष्ण शास्त्री जी के प्रवचन एवं श्री गौरव आर्य जी के भजन होंगे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी मुख्य अतिथि होंगे। - ***संजीव बजाज, प्रधान***

पूज्य आचार्य बलदेव जी की स्मृति में
प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा पूज्य आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर 2 फरवरी 2020 रविवार को प्रांतीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन दयानंद मठ रोहतक हरियाणा में किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा आप सभी को सादर आमंत्रित करती है।

- ***मा. रामपाल आर्य, प्रधान***

आर्य केंद्रीय सभा गुरुग्राम द्वारा
स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

आर्य केंद्रीय सभा गुरुग्राम एवं आर्य समाज सैक्टर-7 एक्स, गुरुग्राम के संयुक्त तत्वावधान में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी का 93वां बलिदान दिवस समारोह 21 व 22 दिसंबर 2019 को आर्य समाज सैक्टर-7 एक्स, गुरुग्राम में आयोजित किया गया। इस अवसर पर विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें पूरे गुरुग्राम जिले के आर्य समाजी महानुभावों ने भाग लिया। ध्वजारोहण आर्य समाज के प्रसिद्ध आर्य नेताओं द्वारा किया गया। श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित जन समुदाय ने स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। पर्यावरण शुद्धि के लिए विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। - ***धर्मेंद्र बजाज, मंत्री***

90वां वार्षिक उत्सव संपन्न

आर्य समाज बिरला लाईस कमला नगर द्वारा 27 दिसंबर से 29 दिसंबर 2019 तक 90वां वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों के साथ-साथ प्रतिदिन यज्ञ, भजन और विशेष प्रवचनों के आयोजन हुए। समापन समारोह में आर्य समाज के महान विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

- ***नरेन्द्र आर्य, मन्त्री***

93वां वार्षिक उत्सव संपन्न

आर्य समाज नवाबगंज गोंडा द्वारा 13 नवंबर से 16 नवंबर 2019 तक 93वें वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन यज्ञ, भजन और प्रवचनों के विशेष सत्रों का आयोजन किया जिसमें सभी क्षेत्रीय आर्य संस्थाओं के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे। - ***शैलेंद्र कुमार आर्य, मंत्री***

आर्य समाज के महापुरुषों के नाम पर मार्ग, पार्क एवं चौराहों के नामकरण
आवश्यक सूचना

अपने सेवा प्रकल्पों एवं लोकोपकारी कार्यों के कारण विख्यात आर्य समाज का भारत में अपना विशेष स्थान है। सम्पूर्ण भारत में सैंकड़ो से ज्यादा स्थानों पर सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहों के नाम आर्य समाज एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी विरजानंद, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों के नाम पर रखे गए हैं, यह अपने आपमें गौरव की बात है, किन्तु इनकी जानकारी एवं रिकार्ड न हो पाना एक खेद का विषय भी है।

अत: भारत की समस्त आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य संस्थानों के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं आर्यजनों से अनुरोध है कि आप कहीं भी आर्य समाज एवं आर्य महापुरुषों के नाम पर किसी भी सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहे को देखें या आपके क्षेत्र में ऐसा कोई नया नामकरण हुआ हो तो कृपया इसकी सूचना/फोटो/सम्बन्धित प्रस्ताव/जानकारी **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15-हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें अथवा 9650183339 पर व्हाट्स एप्प पर भेजें।

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

लखनऊ में वेद प्रचार वाहन का उद्घाटन

वैदिक संस्कृति, स्वास्थ्य, तंबाकू उन्मूलन ट्रस्ट द्वारा 24 नवंबर 2019 को तेलीबाग आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव के अवसर पर कर्नल डॉ. अनिल आहुजा जी द्वारा वेद प्रचार वाहन का विधिवत उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर आचार्य शिवदत्त पाण्डेय जी ने समस्त आर्य जनों की उपस्थिति में प्रचार वाहन पर ओ३म् लिखकर अपनी शुभकामनाएं दी। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को समर्पित इस वेद प्रचार वाहन के लिए ट्रस्ट को बहुत-बहुत बधाई।

वानप्रस्थी महानुभाव अपना विवरण भेजें

हमारे सभी आदरणीय आर्य समाजी महानुभावों के मन में वैदिक धर्म के अनुसार आश्रम व्यवस्था के प्रति अटूट निष्ठा प्रशंसनीय है। जीवन के तीसरे वानप्रस्थ आश्रम के लोग आर्य समाज की सेवा में तन-मन-धन से संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उन समस्त महानुभावों से अनुरोध करती है जिन्होंने चाहे वानप्रस्थ दीक्षा ली हो या न भी ली हो किन्तु अगर उनके मन में आर्य समाज के प्रचार और सेवा कार्यों में रुचि है और वे महानुभाव महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। कृपया वे सभी सज्जनवृन्द अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001'** के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। - ***महामन्त्री***

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनो से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। - ***महामन्त्री***

आर्यसन्देश साप्ताहिक में बाल आर्य प्रतिभा विकास स्तम्भ

आर्यसन्देश साप्ताहिक के आगामी अंकों में 'बाल आर्य प्रतिभा विकास' का एक नियमित स्तम्भ आरम्भ किया जाएगा। इस स्तम्भ में आर्य परिवारों के सभी होनहार बच्चों को सादर आमन्त्रण है कि वे अपनी विशेष योग्यतानुसार स्वरचित कविता, भजन, महापुरुषों के चित्रों की पेंटिंग, शिक्षा या खेल के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि अथवा किसी भी प्रतियोगिता में सफलता प्राप्ति का प्रमाण सहित समाचार बच्चे के फोटो के साथ हमें भेजें। उसे उचित स्थान पर प्रकाशित किया जाएगा। - **सम्पादक**

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

प्रवेश सूचना

महात्मा सत्यानंद मुजांल आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर, लुधियाना में वर्ष 2020-21 हेतु छठी कक्षा से **(आयु: 9 से 11 वर्ष)** कन्याओं के प्रवेश पंजीकरण प्रारंभ हो गया है। पंजीकरण पत्र का मूल्य 100 रुपए है। इसे भरकर 31-3-2020 तक कार्यालय में स्वयं जमा करा सकते है अथवा डाक द्वारा भी भेज सकते है। कन्याओं की लिखित परीक्षा 5 अप्रैल 2020, दिन रविवार को प्रात: 8 बजे सुनिश्चित है। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वस्थ परीक्षण भी उसी दिन होगा। सम्पर्क करें -

मोहनलाल लाकड़ा
मैनेजर, महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल,
शास्त्री नगर, लुधियाना-141002 (पंजाब)
मो. 9814629410, 0161-2459563

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 13 जनवरी, 2020 से रविवार 19 जनवरी, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 16-17 जनवरी, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 15 जनवरी, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

वार्षिक नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन

गुरुवार 23 जनवरी, 2020 प्रात: 9:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली से सम्बद्ध/असम्बद्ध दिल्ली स्थित आर्य विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू किया गया है, के सभी विद्यार्थियों (कक्षा-1 से 12 तक) की नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन 23 जनवरी, 2020 को प्रात: 9:30 बजे सभी विद्यालयों में किया जाना निश्चित किया गया है। अत: समस्त विद्यालयों के प्रधानाचार्य महानुभावों से निवेदन है कि अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या कक्षावार सूची बनाकर यथाशीघ्र भेजे दें, जिससे संख्यानुसार विद्यालयों को प्रश्नपत्र भेजे जा सकें। सभी विद्यालयों की परीक्षा एक ही दिन एक ही समय सम्पन्न होगी।

- सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तोता (9810855695)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के समस्त वैदिक उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक में आर्यजगत के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक महानुभावों के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो के साथ प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित किया है।

अत: समस्त उपदेशक/भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय - अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता/प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें पुस्तक में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण '**सम्पादक, वैदिक उपदेशक/भजनोपदेशक विरणिका**' के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**' के पते पर प्रेषित करें। - *महामन्त्री*

प्रतिष्ठा में,

दो करोड़

सोलह लाख से अधिक लोगों ने देखा

आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी का बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

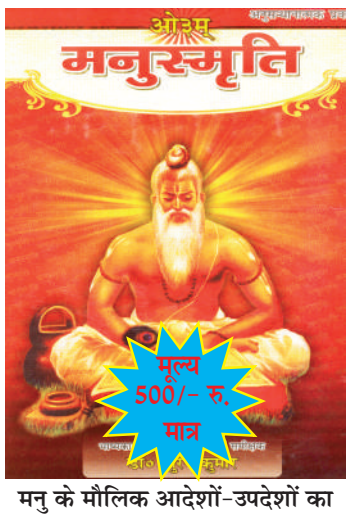

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

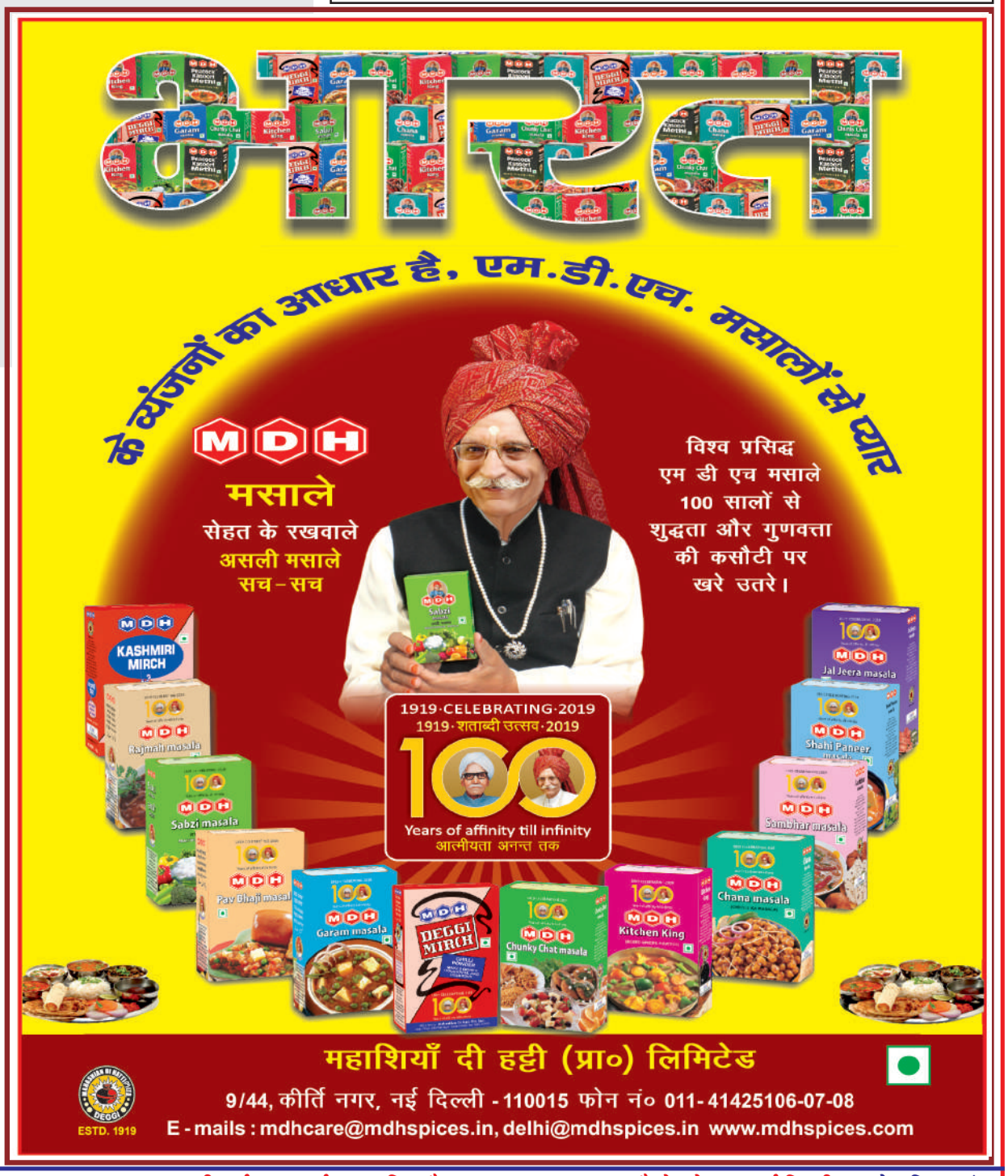

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह